बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 141/2025) **Year: 7th**

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 1.11.2025

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ फ्रांसबीन, पालक, मूली, मेथी, गाजर, शलजम, चुकंदर, लहसुन, सब्जी मटर तथा आलू की बुआई कर दें। ➢ बैगन, टमाटर, मिर्च व गोभी वर्गीय फसलों की रोपाई करें। नमी संरक्षण हेतु सुखी घास की पलवार प्रयोग करें। ➢ मिर्च, टमाटर, बैगन, भिंडी की खड़ी फसलों में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ कद्दू वर्गीय फसलों यथा लौकी, करेला, खीरा, तरोई, आदि, भिंडी, लोबिया, ग्वार, चौलाई की खड़ी फसलों में खरपतवार एवं मृदानमी प्रबंधन करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	➢ मौसम खुलने के उपरांत धान की कटाई करें। ➢ धान कटाई के उपरान्त उसे भली–भांति सुखाकर मिंजाई करें। ➢ खरीफ फसलों की कटाई के उपरान्त खेत अच्छी प्रकार तैयार करें। ➢ उत्तम प्रकार के प्रमाणित बीज का प्रयोग करें। ➢ फसलों की बुवाई उपयुक्त नमी की दशा में कतारों में करना अच्छा रहता है। ➢ खरपतवार की समस्या से बचने हेतु बुवाई के बाद 2–3 दिन के अन्दर फसल के अनुसार खरपतवारनाशी का प्रयोग करें। ➢ दलहनी फसल में पेंडीमेथालिन 3.3 किग्रा. क्यूजलोफोप इथाइल १ किग्रा व्यापारिक तत्व या मेट्रीव्युजिन ३५० ग्राम व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव करें । ➢ केवल पेंडीमेथालिन 3.3 किग्रा व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव किया जा सकता है । ➢ मटर की फसल में खरपतवार के व्यापक नियंत्रण हेतु ओक्सीफ्लोरफेन नामक खरपतवार नाशी की ४०० से ४५० ग्राम व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव किया जाना लाभदायक रहता है । ➢ चने के बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के पश्चात बुआई करें. 20:60:20 (की.ग्रा. हे) की दर से नत्रजन फास्फोरस व पोटाश का प्रयोग बुआई के समय करें। ➢ रबी फसलों के बुवाई हेतु प्रयोग किए जाने वाले उर्वरकों की व्यवस्था अबिलम्ब करलें।

		➢ अगर किसान भाईयों ने मृदा परीक्षण कराया है तो मृदा परीक्षण रिपोर्ट को कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से समझ कर फसल में उसी अनुसार उर्वरकों का व्यवहार करें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम एन पी के मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। ➢ रबी की तिलहनी एवं दलहनी फसलों में गन्धक का प्रयोग क्रमषः 30 कि0ग्रा0 एवं 20 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से अवष्य करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्व प्रबन्धन करते रहे। ➢ दलहनी फसलों की बुवाई में आधारीय उर्वरक के रूप में 50 कि0ग्रा0 डी ए पी एवं 10 कि0ग्रा0 एम ओ पी का प्रति हेक्टेयर के दर से प्रयोग करना चाहिए। ➢ सिंचित गेहूँ में पोषक तत्व की आवष्यकता सामान्यता 120 : 60 : 40 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर होती है। इस हेतु 130 कि0ग्रा0 डीएपी, 210 कि0ग्रा0 यूरिया एवं 67 कि0ग्रा0 एमओपी कि आवष्यकता होती है। डीएपी एवं एमओपी को आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग कर देना चाहिए।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	वर्तमान समय में सर्दियों का मौसम शुरू हो चूका है। इस मौसम में छोटे बड़े और दुधारू पशुओं के खान–पान व प्रबंधन के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है– ➢ सर्दियों के मौसम में अधिकतर भैंस गर्मी (हीट) पर आती हैं, पशुपालकों को भैंस में गर्मी के लक्षण दिखने पर 12–24 घंटे के बीच में दो बार उत्तम नस्ल के भैंसे से या नजदीक के कृत्रिम गर्भाधान केंद्र से ही ग्याभिन कराएं। ➢ यदि भैंस ब्याने के 60–70 दिनों तक पुनः हीट में न आये तो नजदीक के पशुचिकित्सक से जांच कराएं। भैंस व गाय को उचित समय पर हीट में लाने के लिए उन्हें नियमित रूप से 50–60 ग्राम विटामिन युक्त खनिज लवण मिश्रण अवश्य खिलाना चाहिए। ➢ आने वाले समय में तापमान में कमी व ठण्ड से बचाने के लिए पशुशाला के खुले दरवाजे व खिड़कियों को टाट इत्यादि बंद करने का प्रबंध करना चाहिए क्यूंकि गाय–भैंस के छोटे बच्चे और भेड़ बकरियों पर बदलते तापमान का अत्यधिक असर होता है। ➢ रबी के मौसम में दुधारू पशुओं व अन्य पशुओं को हरे चारे की निरंतर उपलब्धता बनाये रखने हेतु बरसीम एवं जई फसल की उन्नत प्रजाति की बुआई अवश्य करें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ ब्यूवेरिया बैसियाना 2.5 किग्रा0 मात्रा को 60–75 किग्रा0 सड़ी हुई गोबर की खाद में मिला कर 8–10 दिन छाया मे रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व अन्तिम जुताई के समय प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिला देने से भूमिगत कीटों तथा दीमक व सफेद गिडार कीट का प्रबन्धन किया जा सकता है। नीम की

		खली 10 कु0 प्रति हे0 की दर से बुवाई से पूर्व मिलाने से खेत में दीमक के प्रकोप में कमी आती है। ➢ सब्जियों में (टमाटर, बैंगन, फूलगोभी व पत्तागोभी) शीर्ष एवं फल छेदक एवं फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतू फेरोमोन प्रपंच 3–4 / एकड़ लगाए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10×10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।
5.	**बागवानी. प्रबंधन**	**कुछ सामान्य ध्यान देने वाली बातें** ❖ फल पौधों का रोपण इस माह के मध्य तक पूरा करें। ❖ वायु अवरोधक बीजू पौधें इस माह में भी लगा सकते हैं। ❖ पहले से लगे वायु–अवरोधक वृक्षों की फैली शाखाओं को काट दें। ❖ मूलवृत पौधों से फुटान को ध्यानपूर्वक हर 15 दिन बाद हटा दें। ❖ छोटे पौधों को सीधा रखने के लिए बंछटी का सहरा दें। ❖ गमलों में खुदाई गहरी करें ताकि खरपतवार अच्छी तरह से गहराई से निकल सकें, परन्तु जड़ों को तथा तने को बचा लें। ❖ नींबू प्रजाति के कमजोर पौधों में 50 ग्राम यूरिया सिंचाई के तुरन्त बाद प्रथम सप्ताह में दें। ❖ वाटर स्प्राउट तथा सकर्स को काट दे। कटे हिस्सों पर बोंडेक्स पेस्ट का लेप करें। ❖ नये तथा पांच साल से कम आयु के पौधों में यदि चाहे तो चने की फसल ली जा सकती है। ❖ खुली सिंचाई हेतु फलदार वृक्षों में सिंचाई एक से सवा महीनें के अंतराल पर करें। ❖ पांच साल से ऊपर के बाग में गेहूं की फसल न करें। ❖ बाग में रोगग्रस्त गिरे हुए फलों को अवश्य निकाल कर फेंके। **आम में मुख्य कृषि कार्य** ❖ आम के बाग में जुताई करके खरपतवार नष्ट कर दें.। ❖ आम में परागण मधुमक्खियों द्वारा होता है । अतः फल आने के समय कीटनाशक दवाओं का प्रयोग न करें अन्यथा फलन प्रभावित होती है ।

		❖ यदि पत्ती खाने वाले कीड़ों का प्रकोप दिखाई दे तो उसके नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस या क्कीनालफास दवा का 1.5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर 2 छिड़काव करें । ❖ आम के पौधों मे जहां गों्द निकलने के लक्षण दिखें उन्हे खूरच कर साफ करे तथा घाव पर बोरडेक्स दवा का लेप कर दें। ❖ आम के पेड पर यदि शाखाओं पर शीर्षरंभी क्षय बीमारी के लक्ष्ण दिखाई दें तो उन शाखाओं को काटकर 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराईड के घोल का 15 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें। ❖ मिलीबग कीट आम के लिए घातक होते हैं.। इनसे बचाव के लिए पेड़ों के तनों के चारों तरफ पॉलीथीन की करीब 30 सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी बांध कर उसके सिरों पर ग्रीस लगा दें। **केले मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ केले में यदि बीटल कीट दिखाई दे तो इसके रोकथाम के लिये डाइमेथोएट १.५ मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करे । ❖ लीफ स्पाट रोग के रोकथाम हेतु डाईथेन एम –45 के 2 ग्राम अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल 2–3 छिड़काव 10–15 दिन के अंतर से करना चाहिए। **पपीता मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ नमी की कमी अथवा अधिकता के कारण फल उत्पादन कम हो जाता है । इसलिए जाड़े के दिनों में 15 दिन के अंतराल पर तथा गर्मी के दिन में 7–10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। जब पेड़ फल से लदा हो तो उस समय सिंचाई करना अति आवश्यक है। **अनार मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ फल पकने के समय हल्की व नियमित सिंचाई करें । ❖ फल मक्खी के नियंत्रण के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छिङकाव करे । दूसरा छिङकाव इसके 15 दिन बाद करे। ❖ **बेर मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ बेर मे फलूों व अपरिपक्व फलों के गिरने को रोकने व उत्तम गुणवत्ता युक्त अधिक उपज के लिए नियमित रूप से 10 से 12 दिन के अंतराल पर हल्की सिंचाई करें । ❖ इस माह में बेर में नत्रजन की 50 प्रतिशत मात्रा जिसमें 500 ग्राम यूरिया प्रति पौघा फल मटर के आकार की अवस्था पर देकर तुरंत बाद सिंचाई करें । ❖ फल झड़ने की रोकथाम हेतु प्लानोफिक्स 4 मिलीलीटर प्रति 15 मिलीलीटर पानी में मिलाकर 15 दिन के अंतराल पर स्प्रे करना चाहिए। ❖ फल मक्खी के नियंत्रण के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छिङकाव करे । दूसरा छिङकाव इसके 15 दिन बाद करे। ध्यान रहे कि छिङकाव से 4 से 5 दिन बाद ही फलों की तुड़ाई करे। **आंवला मे मुख्य कृषि कार्य** ❖ फल सड़न को रोकने के लिए फल तोड़ने के 15 दिन पूर्व 0.1 प्रतिशत कार्बेन्डाजिम का छिड़काव करना चाहिए।
6.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ वानिकी पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ सायंकाल में करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पश्चात् पौधों की सिंचाई करें।

		➢ खेतों में कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई और सफाई करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। ➢ जो किसान चंदन की नर्सरी उगाने के इच्छुक हैं, उन्हें नर्सरी बेड (उभरी हुई क्यारियाँ) तैयार करना चाहिए। नर्सरी बेड का आकार 10 मीटर X 1 मीटर होना चाहिए और ध्यान रखें कि रेत और मिट्टी का अनुपात 3:1 हो। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे	7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार